।। अर्हम् ।।
आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति,श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)
दूरभाष : 01565–224600,224900
ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

त्रिदिवसीय उपासक सम्मेलन सम्पन्न
उपासक श्रेणी प्रेरक श्रेणी बने – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 11 फरवरी : आचार्य महाप्रज्ञ ने त्रिदिवसीय उपासक सम्मेलन के समापन सत्र पर उपस्थित जनमानस को सम्बोधित करते हुए कहा कि उपासक श्रेणी प्रेरक श्रेणी होनी चाहिए। जहां साधु–साध्वियां और समण–समणियां नहीं जाते हैं वहां उपासक वर्ग पर्युषण महापर्व की आराधना कराते है और श्रावक समाज में धर्म की प्रेरणा भरते हैं। हर कार्य को सफलता से सम्पादित करने के लिए गति और प्रेरणा की जरुरत होती है। उन्होने सम्पूर्ण देश से आये उपासकों के कार्यो को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि उपासक अपने जीवन से त्याग,संयम,वैराग्य का संदेश समाज को दें। इस श्रेणी के द्वारा ऐसा कार्य हो की समाज स्वयं धर्म आराधना के लिए उपासकों की मांग प्रस्तुत करें। आचार्यवर ने कहा कि समणीवर्ग की विदेशों में मांग बहुत बढ़ गई है, इसलिए अब उपासकों की संख्या 1000 तक पहुंचनी चाहिए और योग्यता का विकास होना चाहिए। उन्होने युवाचार्य महाश्रमण समेत इस श्रेणी के विकास में शक्ति नियोजित करने वाले मुनि दिनेश कुमार, मुनि योगेशकुमार एवं साध्वी समाज की सराहना की।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि नियंत्रण की क्षमता और संयम की चेतना का विकास न होने से युवा अवस्था, धन और सत्ता खतरनाक हो सकते है, पतन में योगभूत बन सकते हैं। उन्होने कहा कि युवा अवस्था कार्य करने की अवस्था है। युवा में ज्ञान की परिपक्वता और शारीरिक शक्ति का भी विकास हो जाता है। संयम और नियंत्रण शक्ति के साथ हम युवाअवस्था का स्वागत करें।

उन्होने उपासक श्रेणी को सफल बनाने के गूर प्रदान कराते हुए कहा कि उपासकों को अच्छा वक्ता बनना है, इन्द्रियों के संयम की चेतना का विकास करना है और विवेक जागृत करना है। मुनि दिनेश कुमार ने कहा कि उपासकों में संघ और संघपति के प्रति भक्ति, शारीरिक शक्ति के साथ ज्ञान की शक्ति, वाणी और व्यवहार के रुप में सुन्दर अभिव्यक्ति होनी चाहिए। उन्होने कहा कि इन सबके साथ विरक्ति का होना भी जरुरी है।

उपासक श्रेणी के संचालक संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरुप चिण्डालिया ने इस श्रेणी के विकास हेतु आगामी दो वर्षीय कार्यकाल में विशेष ध्यान देने का संकल्प जाहिर किया। उपासक श्रणी विकास वर्ष के संयोजक विनोद बांठिया ने विकास वर्ष की सम्पन्नता पर सबके सहयोग के लिए आभार जताया। उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने विकास वर्ष में संख्यात्मक एवं गुणत्मक विकास की जानकारी देते हुए कहा कि इस वर्ष श्रेणी से 100 नये उपासक जुड़े हैं। उन्होने कहा कि उपासकों के द्वारा प्रवक्ता, अभ्यासी इन दो श्रेणी में पर्युषण महापर्व पर युवाचार्य प्रवर के इंगितानुसार यात्राएं की जाती है। जहां पर धर्मसाधना कराई जाती है। उपासक डालमचंद नौलखा ने गीत ''उपासक श्रेणी की गरिमा हम बढ़ायेगें'' के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मंगलाचरण उपासिका बहिनों के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपासक महावीर दुगड़ ने किया।

क्रमश : 2

दो जनो को उपासक प्रवक्ता पुरस्कार

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरुप चिण्डालिया ने काफी लंबे समय से उपासक के तौर पर धर्मसंध की सेवाएं देने वाले रामनिवास जैन और अर्जुनलाल माण्डोत को उपासक प्रवक्ता पुरस्कार देने की घोषणा की। उन्होने बताया कि यह पुरस्कार इसी वर्ष से प्रारंभ किया जाता रहा है। प्रतिवर्ष दिये जाने वाले इस पुरस्कार में वरिष्ठ उपासक को 1 लाख रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान की जायेगी। इस बार का यह पुरस्कार दोनो वरिष्ठ उपासकों को आगामी दिनों में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित विशिष्ठ समारोह में दिया जायेगा।

कमल दुगड़ को मिला "संघसेवी" संबोधन

रतनगढ़ निवासी एवं कोलकात्ता प्रवासी शासनसेवी बुद्धमल दुगड़ के सुपुत्र कमल दुगड़ को आचार्य महाप्रज्ञ ने उनकी सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए संघसेवी सम्बोधन से संबोधित किया। यह सम्बोधन अब तक केवल साधु–साध्वियों को ही प्रदान किया जाता रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रथम बार किसी श्रावक को यह सम्बोधन प्रदान किया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य महाप्रज्ञ ने पिछले दिनों में ही सम्पूर्ण दुगड़ परिवार को कल्याणमित्र परिवार के सम्बोधन से संबोधित किया था। दुगड़ परिवार से अनेक व्यक्ति जैन विश्व भारती, जय तुलसी फाऊंडेशन, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा आदि संस्थाओं से जुड़े है।

महासभा की नई कार्यकारिणी ने लिया आशीर्वाद

तेरापंथ समाज की माँ कहलाने वाली सर्वोच्च संगठनात्मक संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष चैनरुप चिण्डालिया, चीफ ट्रस्टी राजेन्द्र बच्छावत, महामंत्री भंवरलाल सिंघी समेत सम्पूर्ण नई कार्यकारिणी ने तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण साध्वीप्रमखा कनकप्रभा, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। नई कार्यकारिणी के सदस्यों को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि नई टीम को महासभा के इतिहास पर नजर दोड़ानी चाहिए। तेरापंथ की सर्वप्रथम संस्था के रुप महासभा की स्थापना हुई थी। इसके द्वारा धर्मसंघ की प्रत्येक गतिविधि का संचालन और निरीक्षण किया जाता था। महासभा सामाजिक संरक्षण देने वाली संस्था है। इसकी नई कार्यकारिणी को देश की 400 सभाओं को सक्रिय करने पर ध्यान देना है। नई टीम में युवा और चिंतनशील व्यक्ति है। इनके सामने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का महत्वपूर्ण कार्य है। इस टीम को संगठन में सौन्दर्य और गतिशीलता बढ़े ऐसा कार्य करना है।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक